

भारत @ 75 (भाग II)

भारत @ 75 (भाग I)

प्रलिमिंस के लिये:

लैंगिक अंतराल सूचकांक (GGI), वैश्विक भुखमरी सूचकांक (GHI), महिला श्रम बल, मानव विकास सूचकांक (HDI), बाल मृत्यु दर, NFHS-5 महिलाओं पर संबंधित नषिकरष, शशु मृत्यु दर, वैश्विक जलवायु जोखमि सूचकांक, भ्रषटाचार धारणा सूचकांक

मेन्स के लिये:

समकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति, महिलाओं से संबंधित विकास और विकास की चुनौतियाँ, मानव विकास सूचकांक में भारत की स्थिति

स्वतंत्र भारत में महिलाओं की स्थिति

संदर्भ

- भारत की आजादी के बाद के सात दशकों में, कई लोगों ने उन लोगों के सपने को पूरा करने के लिये कड़ी मेहनत की है जन्होंने आजादी के लिये लड़ाई लड़ी थी। भारत में सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक दोनों तरह के महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं और वैश्विक मंच पर सफलताओं को देखा गया है।
- लेकिन स्वतंत्रता, गरमा, समान अधिकार और प्रतनिधित्त्व की लड़ाई में महिलाओं की स्थिति पर वचार करने की आवश्यकता है क्योंकि वे देश की आधी नागरिकता का नरिमाण करती हैं।

समकालीन भारत में लैंगिक अंतराल की स्थिति:

- **लगानुपात:** पछिले दो दशकों में सकारात्मक संकेत देखे गए हैं और अनुपात थोड़ा सुधर कर वर्ष 2011 में प्रती 1,000 पुरुषों पर 943 हो गया, जो वर्ष 2001 की जनगणना में 933 था।
 - इतहास में पहली बार वर्ष 2021 में महिलाओं का अनुपात पुरुषों से अधिक हुआ। [राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण \(NFHS\)](#) के आँकड़ों के मुताबकि, प्रती 1,000 पुरुषों पर 1,020 महिलाएँ हैं।
 - हालाँकि, वशिषज्जों का मानना था कि यह आँकड़ा दशकीय जनगणना की तुलना में छोटे नमूने के आकार के कारण भारत के लगानुपात का सटीक प्रतनिधित्त्व नहीं था।
 - वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, बाल लगानुपात वर्ष 2011 में 927 से गरिकर प्रती 1,000 पुरुषों पर 914 हो गया।
 - बालिकाओं के प्रती भेदभाव और लगी-चयनात्मक गर्भपात जैसे कई कारक वषिम अनुपात के लिये ज़मिमेदार हैं।
- **बाल मृत्यु दर: 'चलिड्रेन इन इंडिया' शीर्षक से युनसिफ की एक रपिर्ट में बताया गया है कि भारत एकमात्र बड़ा देश है जहाँ लड़कों की तुलना में अधिक लड़कियों की मृत्यु होती है, जन्म के समय वपिरीत लगानुपात प्रती 1000 लड़कों पर 900 लड़कियों के जन्म का कारण है।**
 - वशिष स्तर पर लड़कियों की तुलना में 7% अधिक लड़के 5 वर्ष से कम आयु में मरते हैं लेकिन भारत में 5 वर्ष से कम आयु में 11% अधिक लड़कियों की मृत्यु होती है।
 - वैश्विक स्तर पर भारत में सबसे अधिक बालिका वधू भी हैं।
- **लगी-चयनात्मक गर्भपात: संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की स्टेट ऑफ द वर्ल्ड पॉपुलेशन रपिर्ट, 2022 के अनुसार, भारत में हर दनि असुरकषति गर्भपात से संबंधित कारणों की वजह से आठ महिलाओं की मृत्यु हो जाती है, जिससे असुरकषति गर्भपात देश में मातृ मृत्यु का तीसरा प्रमुख कारण बन जाता है।**
 - वर्ष वर्ष 2007 और वर्ष 2011 के बीच भारत में 65% से अधिक गर्भपात को असुरकषति के रूप में वर्गीकृत किया गया था।
 - NFHS 5 आगे दिखाता है कि एक-चौथाई (27%) से अधिक गर्भपात अपरशकषति महिलाओं द्वारा घर पर बना कसी सहायता के कये गए।
- **मसिगि फीमेलस: स्टेट ऑफ वर्ल्ड पॉपुलेशन वर्ष 2020 में लापता महिलाओं को परभाषति किया गया है, जो अतीत में प्रसवोत्तर और प्रसवपूर्व लगी चयन के संचयी प्रभाव के कारण दी गई तारीखों में आबादी से गायब हैं।**
 - दुनिया की 14.26 करोड़ "लापता महिलाओं" में से 4.6 करोड़ भारत की हैं।
 - वर्ष 2020 में प्रकाशित संयुक्त राष्ट्र की एक रपिर्ट के अनुसार, भारत में लगभग 4.6 लाख लड़कियाँ वर्ष 2013 और वर्ष 2017 के

बीच हर साल जन्म के समय 'लापता' थीं।

- इसने खतरनाक संख्या के पीछे दो मुख्य कारणों के रूप में लगी और **जन्म के बाद महिला मृत्यु दर** के आधार पर लगी **चयन** का हवाला दिया।
- वर्ष 1950 में अपनी स्थापना के बाद से सर्वोच्च न्यायालय में अब केवल 11 महिला न्यायाधीश हुई हैं।

महिला शिक्षा का परिचय:

- **साक्षरता दर:** स्वतंत्रता के समय भारत की साक्षरता दर 20% से कम थी। इन वर्षों में, भारत ने महत्त्वपूर्ण प्रगति की है और समग्र दर में सुधार कर 74.04% (जनगणना वर्ष 2011) कर दी है।
 - **NFHS-5 रिपोर्ट**, जिसमें 15-49 आयु वर्ग में 7.24 लाख महिलाओं और 1 लाख पुरुषों की आबादी का सर्वे था, ने पाया कि महिला साक्षरता दर **72% तक पहुँच गई**।
 - **हालाँकि यह अभी भी वैश्विक औसत दर 87% के मुकाबले 15% कम है।**
- **स्कूली शिक्षा की स्थिति:** 11% पुरुषों की तुलना में 15-49 वर्ष की आयु के बीच **23% महिलाओं ने अभी भी कोई स्कूली शिक्षा प्राप्त नहीं की** थी। एक-चौथाई से अधिक ग्रामीण महिलाएँ कभी स्कूल नहीं गईं, जबकि शहरी महिलाओं की संख्या 13% थी।
 - पछिले कुछ वर्षों में कुल नामांकन में वृद्धि हुई है, लेकिन वर्ष 2012 और वर्ष 2021 के बीच प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तरों में लड़कों की तुलना में कम संख्या में लड़कियों ने प्रवेश लिया।
 - **यूनिफाइड डिसट्रिक्ट इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन प्लस (UDISE+)** के अनुसार, वर्ष 2020-21 में 14.2% लड़कियों माध्यमिक स्तर पर बाहर हो गईं, जबकि 1% ने वर्ष 2019-20 में बीच में पढ़ाई छोड़ दी।
 - लड़कियों के स्कूल छोड़ने के कुछ कारण परिवार द्वारा शिक्षा छोड़ने का दबाव, कम आयु में शादी और घरेलू ज़िम्मेदारियाँ हैं।

हेल्थकेयर परदृश्य क्या है?

- **अल्पपोषण और एनीमिया:** भारत ने वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक वर्ष 2022 रैंकिंग के "स्वास्थ्य और उत्तरजीवित" उप-सूचकांक में सबसे खराब प्रदर्शन किया, जो **146 देशों में अंतिम था**।
 - सरकारी आँकड़ों से पता चलता है कि **प्रजनन आयु की लगभग 20% महिलाएँ कुपोषित हैं**।
 - 20% पुरुषों की तुलना में 15-49 आयु वर्ग की लगभग **60% महिलाएँ एनीमिक हैं**।
 - एनीमिक महिलाओं की संख्या वर्ष 2015-16 के 53% से बढ़कर वर्ष 2019-21 में 57% हो गई।
- **कुपोषित माताओं का बच्चों पर प्रभाव:** माताओं की पोषण स्थिति का बच्चों पर सीधा प्रभाव पड़ता है।
 - NFHS के आँकड़ों से पता चलता है कि **कम वजन वाली माताओं से पैदा होने वाले बच्चों में सामान्य बीएमआई वाली माताओं या उन बच्चों की तुलना में कम वजन वाले या कम वजन होने की संभावना होती है** जिनकी माँ अधिक वजन / मोटापे से ग्रस्त हैं।
 - इसमें शिक्षा की भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है। बिना स्कूली शिक्षा वाली माताओं से पैदा हुए बच्चों में से 45% से अधिक बच्चे अवकसिति थे, जबकि 26% बच्चे 12 या अधिक वर्षों की स्कूली शिक्षा वाली माताओं से पैदा हुए थे।

कार्यबल में महिलाएँ कतिनी सहभागी हैं?

- महिला साक्षरता दर में वृद्धि के बावजूद **महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी में तेज़ी से गिरावट आई है**।
 - **सेक्टर फॉर मॉनीटरिंग इंडियन इकॉनमी (CMIE)** की एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2021-22 में लगभग **9% महिलाएँ कार्यरत थीं या नौकरी की तलाश में थीं**।
- **महिलाओं के लिये कोविड-19 महामारी का प्रभाव गंभीर था क्योंकि बेरोज़गारी दर 17% तक पहुँच गई**, जो पुरुषों की दर से दोगुनी से अधिक थी।
 - **सशुल्क कार्य** में भाग लेने वाली कामकाजी आयु की महिलाओं का अनुपात वर्ष 2021 में घटकर **19% हो गया, जो वर्ष 2006 में 30.7%** था।
- सरकारी आँकड़ों से यह भी पता चलता है कि भारत में महिलाओं की तुलना में पुरुषों के रोज़गार की संभावना अधिक बनी हुई है। 75% पुरुषों की तुलना में, वर्तमान में लगभग **25% महिलाएँ कार्यरत हैं**।
- **साक्षरता का स्तर, विवाह का बोझ और सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका को निर्धारित करने वाले सामाजिक मानदंड** कार्यबल में कम भागीदारी के लिये कुछ महत्त्वपूर्ण चालक हैं।
 - दूसरा कारण यह है कि अधिकांश भारतीय महिलाएँ अवैतनिक घरेलू कार्यों में लगी हुई हैं।

महिलाओं की वित्तीय स्वायत्तता के बारे में NFHS-5 क्या कहता है?

- कामकाजी लड़कियों और महिलाओं में **83% नकद कमाते हैं**, जबकि **22% की कोई आय नहीं है**।
 - सर्वेक्षण से पता चलता है कि **18% विवाहित महिलाएँ स्वतंत्र वित्तीय नरिणय लेती हैं**।
 - नकद कमाने वाली 85% विवाहित महिलाओं का कहना है कि वे अकेले या अपने पति के साथ संयुक्त रूप से नरिणय लेती हैं कि उनकी कमाई का उपयोग कैसे किया जाए।
 - 14% महिलाओं के लिये एक महिला की कमाई के उपयोग के संबंध में पति एकमात्र नरिणय लेने वाला है।
- **79% महिलाओं के पास बैंक या बचत खाता है** जिसका वे स्वयं उपयोग करती हैं।
- आयु वर्ग की 50% से कुछ ही अधिक महिलाओं के पास मोबाइल फोन है जिसका वे स्वयं उपयोग करती हैं।
- **42% महिलाओं के पास अकेले या किसी के साथ संयुक्त रूप से घर है**।

- अपने पतिके बराबर या उससे अधिक कमाने वाली नयोजित महिलाओं का प्रतशित 42% (NFHS-4) से घटकर 40% हो गया है।

महिलाओं के खिलाफ अपराध:

- डेटा से पता चलता है कि पिछले कुछ वर्षों में वैवाहिक बलात्कार सहित दुर्व्यवहार, उत्पीड़न और यौन हिसा के मामलों में वृद्धि हुई है।
 - महिलाओं के खिलाफ अपराध के सरकारी आँकड़ों से पता चला है कि भारत में वर्ष 2018 में औसतन हर 15 मिनट में एक बलात्कार की घटना देखी गई।
- डिजिटलीकरण के आगमन के साथ, चीजें और भी बदतर हो गई हैं, जहाँ महिलाओं को ऑनलाइन परेशान किया जा रहा है और दुर्व्यवहार और बलात्कार की धमकियाँ आम होती जा रही हैं।
- NFHS-5 डेटा में पाया गया कि भारत में लगभग एक-तर्हाई महिलाओं ने शारीरिक या यौन हिसा का अनुभव किया है।
 - 18 से 49 वर्ष की आयु के बीच 30% महिलाओं ने 15 साल की आयु से शारीरिक हिसा का अनुभव किया है और 6% ने अपने जीवनकाल में यौन हिसा का अनुभव किया है।
- महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिसा मामूली रूप से घटकर 31.2% से 29.3% हो गई, लेकिन 32% विवाहित महिलाओं ने शारीरिक, यौन या भावनात्मक वैवाहिक हिसा का अनुभव किया।

नरिणय लेने में महिलाओं का प्रतनिधित्व:

- स्वतंत्रता के बाद से नरिणय लेने में महिलाओं के प्रतनिधित्व के संबंध में बहुत कुछ नहीं बदला है- संसद एक पुरुष प्रधान संस्था है।
 - वर्तमान लोकसभा में केवल 14% संसद सदस्य महिलाएँ हैं। वैश्विक औसत 25 है।
- अंतर-संसदीय संघ के अनुसार, संसद के नचिले सदन में नरिवाचति महिला प्रतनिधियों के प्रतशित के मामले में भारत लगभग 200 देशों की सूची में 144वें स्थान पर है।
 - स्वतंत्रता के लगभग सात दशकों में लोकसभा में महिलाओं का प्रतनिधित्व 20% के आँकड़े को पार करने में वफिल रहा है।
- वर्षों से, राजनीतिक दलों ने कई बार महिलाओं को 33% आरक्षण का वादा किया है, लेकिन अब तक ऐसा नहीं हुआ है।
- भारतीय न्यायपालिका में स्थिति अलग नहीं है- नचिली न्यायपालिका में लगभग 30% महिला न्यायाधीश हैं, उच्च न्यायालयों में 11.5% और वर्तमान में सर्वोच्च न्यायालय में 33 में से केवल चार वर्तमान में न्यायाधीश महिलाएँ हैं।
 - पंजीकृत 1.7 मिलियन अधविकृताओं में से केवल 15% महिलाएँ हैं।
 - 1950 में अपनी स्थापना के बाद से सर्वोच्च न्यायालय ने केवल 11 महिला न्यायाधीशों को देखा है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, पछिले वर्ष के प्रश्न (PYQ)

Q.1. निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए:

प्रश्न. जननी सुरक्षा योजना कार्यक्रम का प्रयास है (वर्ष 2012):

1. संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देना
2. प्रसव की लागत को पूरा करने के लिये माँ को आर्थिक सहायता प्रदान करना
3. गर्भावस्था और प्रसूतिके कारण मज़दूरी के नुकसान का पुनर्भरण

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

Q.2. निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए:

Q. समय और स्थान के साथ भारत में महिलाओं के लिये नरितर चुनौतियाँ क्या हैं? (वर्ष 2019)

भारत - आजादी के बाद से विकास

संदर्भ:

- भारत की स्वतंत्रता ने विकास, अवसर, लोकतांत्रिक शासन और स्वतंत्रता के एक नए युग की शुरुआत की। हालाँकि यह एकमात्र ऐसा क्षेत्र या देश नहीं था जो उस समय अत्यधिक परिवर्तन से गुज़र रहा था।

- कई अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई और अफ्रीकी देश भी औपनिवेशिक शासन से आज़ादी के लिये लड़ रहे थे या स्वतंत्र हो गए थे।
- पश्चिम भी द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से उबर रहा था।
- नक्सिंदेह, भारत ने पछिले 75 वर्षों में महत्त्वपूर्ण प्रगति की है, लेकिन वैश्विक स्तर पर इसकी स्थिति पर तब गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है, जब वकिसति पश्चिम या अन्य देशों की बात आती है, जिनहोंने समान परस्थितियों में समान समय अवधि के दौरान स्वतंत्रता प्राप्त की थी।

भारत की प्रगति:

- विकास संकेतक: नए स्वतंत्र भारत में जीवन प्रत्याशा दर बेहद खराब थी और शिशु मृत्यु दर बहुत अधिक थी।
 - पक्की सड़कें कम थीं और अधिकांश के लिये वदियुत की पहुँच एक वलिसति थी।
 - हालाँकि भारत दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश बना हुआ है, लेकिन तब से इसने स्वास्थ्य सेवा, बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकी में बड़ी प्रगति की है। ये तीनों अब आबादी के एक महत्त्वपूर्ण अनुपात के लिये सुलभ हैं।
 - भारत की शिशु मृत्यु दर वर्ष 1960 के 161.8 से घटकर वर्ष 2020 में 27 हो गई।
 - जबकि वर्ष 1990 के दशक में केवल 50% घरों में वदियुत की पहुँच थी, अब यह अंतर व्यावहारिक रूप से नषिक्रयि हो गया।
 - वर्ष 2020 में 40% से अधिक भारतीय इंटरनेट का उपयोग कर रहे थे।
- राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों का प्रदर्शन: वभिन्न सामाजिक आर्थिक और विकास संकेतकों पर राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों ने समय के साथ प्रगति की है लेकिन सुधार का स्तर राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों में भिन्न होता है।
 - भारत के उत्तरी, दक्षिणी, मध्य, पूर्वी, पश्चिमी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों के प्रदर्शन में काफी अंतर है।
 - दक्षिणी और पश्चिमी राज्यों ने अन्य क्षेत्रों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया है।
 - पूर्वी राज्यों, जैसे कि बिहार, ओडिशा और झारखंड ने संकेतकों में खराब प्रदर्शन किया है।

संकेतकों का नषिक्रयि:

- मानव विकास सूची:
 - मानव विकास सूचकांक (HDI) मानव विकास के तीन प्रमुख आयामों को मापता है:
 - एक दीर्घ और स्वस्थ जीवन (जन्म के समय जीवन प्रत्याशा द्वारा मापा जाता है)
 - ज्ञान (स्कूली शिक्षा के औसत और अपेक्षित वर्षों से मापा जाता है)
 - सभ्य जीवन स्तर (PPP के संदर्भ में प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय यूएस डॉलर में मापा जाता है)
 - 0-1 के पैमाने पर, 1 उच्चतम संभव HDI है।
 - भारत का HDI वर्ष 1950 में 0.11 अंक बढ़कर वर्ष 2019 में 0.65 हो गया।
- शिशु मृत्यु दर: शिशु मृत्यु दर एक वर्ष में प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर एक वर्ष की आयु तक पहुँचने से पहले मरने वाले शिशुओं की संख्या है।
 - वर्ष 1960 और वर्ष 1975 के बीच, भारत में सातवीं सबसे खराब शिशु मृत्यु दर थी। लेकिन वर्ष 2020 में 27 के IMR के साथ भारत ने पाकिस्तान से बेहतर प्रदर्शन किया।
 - पाँच देश- तुर्की, बांग्लादेश, भूटान, मसिर और नेपाल- वर्ष 1960-75 की अवधि में भारत से पीछे थे, वर्ष 2020 में बेहतर IMR के साथ आगे बढ़े।
 - राज्यों में, नगालैंड ने वर्ष 2018 में सबसे कम IMR (4) के साथ केरल को पीछे छोड़ दिया। वर्ष 2018 तक MP में उच्चतम IMR (48) था।
- सरकार में महिलाएँ: भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों के विपरीत कई महिलाओं को सरकार और राजनीतिक नेतृत्व के पदों पर देखा है लेकिन जब हम संसद में महिलाओं के प्रतिशत को देखते हैं, तो यह संख्या वर्ष 2021 में बढ़कर 14% हो गई, जो वर्ष 1997-98 में 7% थी।
 - जबकि संसद में महिलाओं की हसिसेदारी दोगुनी हो गई है, वकिस की सापेक्ष गति धीमी रही है क्योंकि कई देशों ने वचिराधीन अवधि में भारत को पीछे छोड़ दिया है।
- वदियुत और इंटरनेट का उपयोग: वर्ष 1993 और वर्ष 2000 के बीच भारत की 50% से अधिक आबादी की वदियुत तक पहुँच थी। वर्ष 2020 तक भारत अपनी 99% आबादी को वदियुत उपलब्ध कराने में कामयाब रहा।
 - पछिले वर्ष 20 वर्षों में जब इंटरनेट जनता के लिये सुलभ हो गया है, भारत अपनी 43% आबादी तक पहुँच प्रदान करने में कामयाब रहा है।
 - भारतीय उपमहाद्वीप में भूटान एकमात्र ऐसा देश है जिसकी रैंक 53.5% है।
 - जबकि भारत ने इंटरनेट और वदियुत की पहुँच जैसे संकेतकों पर अच्छा प्रदर्शन किया है, यह अन्य देशों द्वारा HDI, प्रति व्यक्ति जीडीपी, IMR और महिलाओं के प्रतिनिधित्व जैसे संकेतकों से आगे नकिल गया है।

राज्य-वशिष्ट परदृश्य क्या है?

- HDI के संदर्भ में: राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में वर्ष 1990 में केवल केरल और गोवा ने 0.55 स्कोर किया था, जबकि सभी राज्यों / केंद्रशासित प्रदेशों ने वर्ष 2019 तक इस अंक को पार कर लिया था।
 - वर्ष 2019 में केवल बिहार और उत्तर प्रदेश में HDI 0.6 से कम था।
- सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी): सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) एक राज्य के भीतर उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं के आर्थिक मूल्य का योग है, जिसे एक वर्ष के दौरान बना दोहराव के गिना जाता है।
 - जबकि सभी राज्यों का राज्य घरेलू उत्पाद वर्ष 1993-94 में ₹20,000 के नशान से नीचे था, यह वर्ष 2019-20 तक ₹30,000 को पार कर गया।

- वास्तव में इस समय तक, दक्षिण, पश्चिमि (राजस्थान को छोड़कर) और उत्तर (उत्तर प्रदेश को छोड़कर) के सभी राज्यों ने ₹1 लाख का आँकड़ा पार कर लिया था।
- **गरीबी दर:** वर्ष 1990 के दशक के मध्य में भारत में आधे से अधिक राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में **गरीबी दर 30%** से अधिक थी।
 - अपनी 50% से अधिक आबादी गरीबी रेखा से नीचे होने के साथ बहिर में वर्ष 1993-94 में गरीब लोगों की हसिसेदारी सबसे अधिक थी।
 - वर्ष 2011-12 तक 10 से कम राज्यों में गरीबी दर 30% से ऊपर थी।
 - **सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले राज्य के रूप में छत्तीसगढ़ (39.9%)** ने बहिर को पीछे छोड़ दिया था।
 - **1993-94 में पंजाब (11.8%)** में अत्यधिक गरीबी में रहने वाले लोगों की हसिसेदारी सबसे कम थी।
 - **वर्ष 2011-12 तक गोवा की हसिसेदारी सबसे कम (5.1%) थी।**
- **जन्म के समय जीवन प्रत्याशा:** जीवन प्रत्याशा उन वर्षों की औसत संख्या है जो एक व्यक्ति के जीवित रहने की संभावना है यद्यत्तु तक समान मृत्यु दर की स्थिति के संपर्क में है।
 - 1990 और वर्ष 2013-17 की शुरुआत में क्रमशः 72.9 एवं 75.2 की औसत जीवन प्रत्याशा के साथ केरल जन्म के समय उच्चतम जीवन प्रत्याशा वाला राज्य बना रहा।
 - 1991-95 की अवधि में मध्य प्रदेश में सबसे कम जीवन प्रत्याशा (54.7) थी।
 - उत्तर प्रदेश ने वर्ष 2013-17 की अवधि में 65 की जीवन प्रत्याशा के साथ अपना स्थान प्राप्त किया।
- **शौचालय सुविधाएँ:** अधिकांश राज्यों में वर्ष 1990 के दशक की शुरुआत में **60% से कम घरों में शौचालय की सुविधा थी। वर्ष 1992-93** में केरल सहित पूर्वोत्तर राज्यों में 70% से अधिक घरों में शौचालय की सुविधा थी।
 - जबकि इस अवधि के दौरान उत्तरी राज्यों में शौचालय सुविधाओं वाले घरों की हसिसेदारी खराब थी, ऐसे राज्यों ने वर्ष 2019-21 तक दूसरों के साथ प्रगति की।
 - **दोनों अवधियों के दौरान शौचालय की सुविधा वाले घरों में मजोरम का हसिसा सबसे अधिक था।**
 - वर्ष 2019-21 तक केवल झारखंड, ओडिशा और बहिर ने 70% का आँकड़ा पार नहीं किया था।
- **अशुद्ध ईंधन:** वर्ष 1990 के दशक की शुरुआत में लकड़ी जैसे ठोस ईंधन से खाना पकाने वाले घरों की हसिसेदारी बहुत अधिक थी। इस अवधि के दौरान दक्षिणी राज्य और पूर्वोत्तर राज्य दूसरों से पीछे रह गए।
 - वर्ष 2019-21 तक दक्षिणी राज्यों ने अन्य क्षेत्रों को पीछे छोड़ दिया, जबकि पूर्वोत्तर राज्य पीछे रह गए।
 - अधिकांश पूर्वी और मध्य राज्यों में **40% से अधिक परिवारों ने खाना पकाने के लिये ठोस ईंधन का उपयोग करना जारी रखा।**

अन्य सूचकांकों पर भारत का प्रदर्शन कैसा है?

- **प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक:** यह देशों को 0 से 100 तक के स्कोर पर रैंक प्रदान करता है, जसिमें **100 सर्वश्रेष्ठ स्कोर होता है।**
 - विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक के वर्ष 2022 संस्करण ने भारत को 180 देशों में से 150 में स्थान दिया।
 - **नॉर्वे के 92.65 के मुकाबले भारत का वैश्विक स्कोर 41 था।**
 - वर्ष 2002 में भारत की रैंक 80 थी।
- **पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक:** पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक (ईपीआई) वर्ष 2022 ने जलवायु परिवर्तन को कम करने, पर्यावरणीय स्वास्थ्य में सुधार और पारिस्थितिकी तंत्र की जीवन शक्ति की रक्षा करने से संबंधित मापदंडों में प्रदर्शन के आधार पर भारत को 180 देशों में सबसे नचिले पायदान पर रखा है।
 - **पछिले 10 सालों में भारत की रैंक में 55 अंक की गिरावट आई है।**
- **वैश्विक भुखमरी सूचकांक:** वैश्विक भुखमरी सूचकांक (GHI) नमिनलखित संकेतकों के आधार पर देशों की वार्षिक रैंकिंग है: अल्पपोषण, चाइल्ड वेस्टिंग, बाल स्टंटिंग, बाल मृत्यु दर।
 - रपिर्ट पहली बार वर्ष 2006 में प्रकाशित हुई थी और भारत 119 देशों में 96वें स्थान पर था। अक्टूबर 2021 में प्रकाशित ताज़ा रपिर्ट में भारत 116 देशों में 101वें स्थान पर था।
- **वैश्विक जलवायु जोखिम सूचकांक:** यह विश्लेषण करता है कि किस हद तक देश मौसम से संबंधित नुकसान की घटनाओं जैसे- तूफान, बाढ़ आदि से प्रभावित हुए हैं। रैंक जतिना अधिक होगा, कसिी देश पर मौसम संबंधी घटनाओं का प्रभाव उतना ही खराब होगा।
 - वर्ष 2021 के वैश्विक जलवायु जोखिम सूचकांक के अनुसार, वर्ष 2019 में सबसे ज्यादा प्रभावित देश मोजाम्बिक, जमिबाब्वे और बहामा थे।
 - **शीर्ष दस में भारत सातवें स्थान पर था।**
- **भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक:** यह "विशेषज्ञों और व्यवसायियों के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र के भ्रष्टाचार के कथित स्तरों" के आधार पर देशों को 0 से 100 के पैमाने पर स्कोर करता है। **0 अत्यधिक भ्रष्ट है, जबकि 100 बहुत अच्छी स्थिति है।**
 - भारत ने वर्ष 2022 भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक में 40 अंकों की बढ़त हासिल कर **85वें स्थान पर था।** हालाँकि इस सूचकांक पर भारत का सबसे खराब प्रदर्शन नहीं था।
- **हेनले पासपोर्ट इंडेक्स:** यह मापता है कि कसिी देश का पासपोर्ट कतिना शक्तिशाली है (उन गंतव्यों की संख्या जहाँ एक देश का पासपोर्ट धारक बना पूर्व वज़ा के यात्रा कर सकता है)।
 - हेनले पासपोर्ट इंडेक्स का पहला संस्करण वर्ष 2006 में प्रकाशित हुआ था, जब भारत 71वें स्थान पर था।
 - रपिर्ट के वर्ष 2022 संस्करण में भारत 87वें स्थान पर है; भारतीय पासपोर्ट धारक दुनिया भर में 60 वीजा-मुक्त गंतव्यों तक पहुँच सकते हैं।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, पछिले वर्ष के प्रश्न (PYQ)

?????????:

प्रश्न. नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजयि: (वर्ष 2009)

1. शशु मृत्यु दर जन्म के एक महीने के भीतर शशुओं की मृत्यु को ध्यान में रखती है ।
2. शशु मृत्यु दर उस वर्ष के दौरान प्रतः 100 जीवति जन्मों पर एक वशुष वर्ष में शशु मृत्यु की संख्या है ।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

वर्ष: (d)

??????:

प्रश्न: उच्च वकिस के लगातार अनुभव के बावजूद भारत अभी भी मानव वकिस के नमिनतम संकेतकों के साथ है । उन मुद्दों की जाँच कीजयि जो संतुलति और समावेशी वकिस को आदर्शवादी बनाते हैं । **(वर्ष 2019)**

प्रश्न. राष्ट्रिय बाल नीतिके मुख्य प्रावधानों की जाँच कीजयि और इसके कार्यान्वयन की स्थतिपर प्रकाश डालयि । **(वर्ष 2016)**

प्रश्न. भारत के कुछ सबसे समृद्ध क्षेत्रों में महिलाओं के लयि प्रतकूल लगानुपात क्यों है? अपने तर्क दीजयि । **(वर्ष 2014)**

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/india-75-part-ii>

